v/;k; & prqFkZ

'kks/k i)fr

सुखी जीवन की तलाश, मानव को न जाने कितने प्रश्नों के भंवर से निकालती है और वह अपने लिये जीवन भर उच्च से उच्चतर सुविधा ढूढ़ने का प्रयास करता है।

यह प्रयास उसके जीवन में नित नई खोजें और उनके हल सामने लाता है। जिसके जरिये मनुष्य मस्तिकष्क में अनुभवों का भंडार संग्रहित होता रहता है।

यह न केवल वह अपने लिये उपयोग में लाता है, बल्कि वह इसको घर, परिवार, समाज के हित के लिये भी प्रदर्शित करता है और सम्पूर्ण मानव जाति को लाभान्वित भी करता है, यही खोज शोध कहलाती है।

शोध की प्रक्रिया क्रमबद्ध पद्धतियों से होकर गुजरती है जिसमें किसी एक उद्देश्य को लेकर विभिन्न तथ्यों का विश्लेषण कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हल निकाला जाता है।

ekl j d vu lkj – 'सामाजिक घटनाओं व समस्याओं के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये व्यवस्थित अनुसंधान को हम सामाजिक शोध कहते हैं।

गलत परिणाम, भ्रमात्मक, एवं अविश्वासपूर्ण होते हैं इसी कारण शोध कार्य का उद्देश्य नवीन, स्पष्ट, वास्तविक एवं वैज्ञानिक तथ्यों को सामने लाना और सत्य परिणामों को जनसाधारण तक पहुॅचाना होना चाहिये।

शोध कार्य हेतु प्रस्तावित अध्ययन पद्धति

v/;;u dk fo"k; :–

शोधार्थी का विषय ^^fofHkUu vk;] fyx rFkk tUeØe d 0;fDr;k dh jx ikFkfedrk ij mud 0;fDrRo d iHkko dk v/;;u** है।

शोधन समस्या के चयन के पश्चात् शोधन की उचित दिशा निर्धारित करने हेतु परिकल्पना का निर्माण करना आवश्यक है –

ifjdYiuk – परिकलपना या उपकल्पना एक ऐसी धुरी है जिसके इर्द गिर्द शोधार्थी के शोध सम्बन्धी सभी चरणों का उद्देश्य घूमता है जो कि शोधार्थी अपने मस्तिष्क में अर्मूत रूप से विकसित कर समस्त वैज्ञानिक तथ्यों का संग्रहण करता है।

y|.Mox| & ''परिकल्पना एक सामयिक सामस्यीकरण है जिसकी वैधता की जांच शेष रहती है।''

e\Xx|bxu ,Q-t|- ¼1969½ ''उपकल्पना एक प्रस्ताव के रूप में परिभाषित की जा सकती है जिसकी प्रमाणिकता की परीक्षा की जा सकती है।

परिकल्पना के अभाव में समस्या से संबंधित आवश्यक तथ्यों अथवा चरणों का स्पष्ट तथा विशिष्ट ज्ञान नहीं होता है। इस कारण अनुसंधान में परिकल्पना की रचना अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न शोध परिकल्पनायें विकसित की गई हैं –

1. विभिन्न व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

2. विभिन्न लिंग के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक रूप से विभिन्न पायी जाती है। रंग विभिन्नता को दर्शाने के लिये शोधार्थी ने कुल 2 उपकल्पनाओं को निर्माण किया है –

   (A) महिलाओं की रंग प्राथमिकता में सार्थक भिन्नता पायी जाती है।

   (B) पुरूषों की रंग प्राथमिकता में सार्थक भिन्नता पायी जाती है।

3. विभिन्न आयु के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में विभिन्नता पायी जाती है। इस विभिन्नता को दर्शाने के लिये कुल 3 उपकल्पनायें विकसित की गई हैं–

(A) विभिन्न वाल्यावस्था के बालक बालिकों की रंग में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(B) विभिन्न किशोरावस्था के किशोर किशोरियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(C) विभिन्न प्रौढ़ावस्था के महिला पुरूषों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

4. विभिन्न जन्मक्रम के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक भिन्नता पायी जाती है। इस भिन्नता को दर्शाने के लिए कुल 6 उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

(A) विभिन्न जन्मक्रम में व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में लाल रंग की प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(B) विभिन्न जन्मक्रम में व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में पीला रंग की प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(C) विभिन्न जन्मक्रम में व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में नीला रंग की प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(D) विभिन्न जन्मक्रम में व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में हरा रंग की प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(E) विभिन्न जन्मक्रम में व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में नारंगी रंग की प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(F) विभिन्न जन्मक्रम में व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में बैगनी रंग की प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

5. विभिन्न आयु के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक विभिन्नता पायी जाती है। इस विभिन्नता को दर्शाने के लिये 6 उपकल्पनाओं का विकास किया गया है –

(A) विभिन्न व्यक्तियों में आयु के अनुसार लाल रंग की प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

(B) विभिन्न व्यक्तियों में आयु के अनुसार पीले रंग की प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

(C) विभिन्न व्यक्तियों में आयु के अनुसार नीले रंग की प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

(D) विभिन्न व्यक्तियों में आयु के अनुसार हरे रंग की प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

(E) विभिन्न व्यक्तियों में आयु के अनुसार नारंगी रंग की प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

(F) विभिन्न व्यक्तियों में आयु के अनुसार बैगनी रंग की प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

6. विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(A) विभिन्न व्यक्तियों में पुरूषों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जाता है।

(B) विभिन्न महिलाओं के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जाता है।

7. विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अनुसार रंग प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है। इसको दर्शाने के लिये 6 उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

(A) विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अनुसार लाल रंग की प्राथमिकता में अंतर पाया जाता है।

(B) विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अनुसार पीले रंग की प्राथमिकता में अंतर पाया जाता है।

(C) विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अनुसार नीले रंग की प्राथमिकता में अंतर पाया जाता है।

(D) विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अनुसार हरे रंग की प्राथमिकता में अंतर पाया जाता है।

(E) विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अनुसार नारंगी रंग की प्राथमिकता में अंतर पाया जाता है।

(F) विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अनुसार बैगनी रंग की प्राथमिकता में अंतर पाया जाता है।

dk;ldkjh ifjHkk"kk

ckY;koLFkk – बाल्यावस्था सम्पूर्ण जीवन की सर्वाधिक संवेदनशील अवस्था है। बाल्यावस्था में बालक सबसे अधिक व तीव्रगति से सीखता है। अतः इसे जीवन की शिक्षणावस्था भी कहा जाता है। यह अवस्था गत्यात्मकता की अवस्था होती है, अथवा यह सतत् परिवर्तनशील अवस्था होती है।

fd'kkjkoLFkk – किशोरावस्था जीवन की नाजुक अवस्था है, जहां बाल का झुकाव जिस दिशा में हो जाता है, वह उसी दिशा में आगे बढ़ता है, इस समय बालक में कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, विशेष अधिकारों, सामाजिक संबंधों में विशेषतः परिवर्तन आ जाते हैं। ऐसी स्थिति में स्वयं के माता–पिता सभी साथियों और अन्य के प्रति दृष्टिकोण को बदलाव अनिवार्य हो जाता है।

0;Ld voLFkk – किशोरावस्था के उपरांत जब व्यक्ति अपना वैवाहिक जीवन शुरू कर लेता है और पारिवारिक दायित्व उठाने के लायक खुद को समझने लगता है तथा आर्थिक रूप से चिन्तायुक्त हो जाता है, माता–पिता के कार्यो में अपना हाथ बंटाता है तथा जिम्मेदारी का अहसास सर्वाधिक इसी अवस्था में होता है। मुख्यतः इस अवस्था को 23–31 की अवस्था माना गया है।

ik<kkoLFkk – हरलॉक के अनुसार प्रौढ़ावस्था की आयु 45 से 60 वर्ष मानी गयी है जिसमें व्यक्तियों की वृद्धि पूर्ण हो चुकी होती है तथा व्यक्ति स्थायित्व पा लेता है। प्रौढ़ावस्था को 32 से 40 की अवस्था भी माना जाता है।

vk;q & किसी भी व्यक्ति की शारीरिक आयु जिस दिन उस बालक का जनम हुआ है उस दिन से ही मापित की जाती है।

fyax – प्रस्तुत शोध में दोनों ही लिंग के साक्ष्यों का समावेश किया गया है।

tUeØe – जिस क्रम में कोई भी बालक अपने परिवार में जन्म लेता है, वह क्रम बालक का जन्मक्रम कहलाता है।

0;fDrRo – (प्रो. यूंग मरे के अनुसार) व्यक्तित्व किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के मन रचनात्मक एवं गत्यात्मक गुणों का प्रतिनिधित्व करता है जो किसी परिस्थिति के प्रति विशिष्ठ प्रतिक्रियाओं द्वारा परिलक्षित होते हैं।

jax – (प्रमिला मेहरा के अनुसार) रंग प्रकाश का ही एक गुण है जिन्हें आंखे देखती हैं और विभिन्न आकार की प्रकाश लहरों से बनते हैं।

<u>lkekftd vuqla/kku dk vfHkdYi</u> –

सामाजिक अनुसंधान के उद्देश्यों में विभिन्नता पाई जाती है इस भिन्नता के परिणामस्वरूप सामाजिक अनुसंधान के अभिकल्पों में विविधता का होना नितांत स्वभाविक है। सामाजिक अनुसंधान के प्रमुख तीन अभिकल्प होते हैं। ये अभिकल्प निम्न हैं :–

1. अन्वेषणात्मक अथवा निरूपणात्मक अभिकल्प
2. वर्णानात्मक अभिकल्प
3. निदानात्मक अभिकल्प
4. प्रयोगात्मक अभिकल्प

o.kkRed vfHkdYi – इस शोध में वर्णात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। इस अनुसंधान अभिकल्प का मौलिक उद्देश्य समस्या से संबंधित वास्तविक तथ्यों के आधार पर वर्णात्मक विवरण प्रस्तुत करना है। इस अध्ययन की मौलिक विशेषता पूर्ण तथा यर्थाथ सूचनाएँ प्राप्त करना है। इस प्रकार का अध्ययन किसी समुदाय या समूह के सम्पूर्ण जीवन से संबंधित होता है। सामाजिक जीवन अनेक समस्याओं से भरा पड़ा है। इस समस्याओं में आवास, जाति, संरचना सामाजिक संघर्ष, शिक्षा आदि सम्मिलित हैं। इन सस्याओं में से किसी एक का वर्णात्मक विवरण प्रस्तुत करने के लिये आवश्यक है कि इनका अध्ययन किसी एक वैज्ञानिक विधि की सहायता से किया जाय। इसके लिये सामाजिक समस्या को सामने रखना और उसके अनुरूप अनुसंधान अभिकल्प को विकसित किया जाता है।

v/;;u {k= &

शोध योजना का विषय चयन तथा परिकल्पना विकास के पश्चात्, शोध कार्य के क्षेत्र का निर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक होता है। अध्ययन का असीमित क्षेत्र तथा विशय की अस्पष्टता एवं त्रुटिपूर्ण अवधारणायें शोध कार्य को अनिश्चित एवं प्रभावहीन बनाती हैं। विषय अध्ययन को एक ओर असीमित क्षेत्र अध्ययन को जटिल कर देता है। तो दूसरी ओर प्राप्त निष्कर्षो और प्राप्त होने वाले परिणामों को शंका या संदेह से देखा जाता है। इसलिये यह आवश्यक है अपने शोध कार्य को प्रारंभ करने के पूर्व किस क्षेत्र में करना है। यह निश्चित करना भी आवश्यक है। इसी क्षेत्र से प्रतिनिधित्व निदर्श का चुनाव किया जाता है।

dkyl fi;lu d vulkj &

''शोध का क्षेत्र वास्तव में असीमित है तथा इससे संबंधित विषय सामग्री भी अनन्त है।'' प्रस्तुत शोध का विषय ''महिलाओं के परिधान में रंग चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना है''।

इस हेतु वृहत्तर ग्वालियर क्षेत्र को शोध कार्य हेतु चयनित किया गया है। जो कि पूर्व में मध्य भारत की राजधानी रहा है। साथ ही ये क्षेत्र मराठो का शासन काल भी रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार ग्वालियर नगर की जनगणना 14,148 तथा इस नगर का क्षेत्रफल 2,810 एकड़ 140 है तथा ग्वालियर की जनसंख्या 64,14,948 है।

ogÙkj Xokfy;j rhu miuxjk e cVk gvk g &

1. ikphu Xokfy;j – ग्वालियर क्षेत्र का यह उपनगर प्राचीन ग्वालियर के नाम से जानते हैं जो पहाड़ी किले के उत्तर में है।

2- y'dj – इसकी नींव किले के दक्षिण की ओर स्थित है जो प्राचीन काल में महाराजा दौलत राव सिंधिया की फौजी छावनी थी।

3- ejkj – यह उपनगर किले के पूर्व में स्थित है। जो पहले ब्रिटिश छावनी थी। यह तीनों क्षेत्र 8288 वर्गमीटर में फैले हुए हैं क्षेत्रों की स्थिति मानचित्र में दर्शायी गयी है।

ifrn'k dk puko :

कोई अध्ययन विषय चाहे अत्यधिक व्यापक है अथवा सीमित, प्रत्येक अध्ययन से संबंधित सामाजिक इकाईयों की संख्या इतनी अधिक होती है कि सभी का अध्ययन कर सकना साधारणतया संभव नहीं होता है।

अतः सम्पूर्ण समग्र में से कुछ प्रतिनिधि इकाईयों के चयन की प्रणाली को ही हम निर्देशन प्रतिचयन अथवा प्रतिदर्श कहते हैं।

शोध कार्य की विधि को सुगम सरल तथा शुद्ध बनाने हेतु प्रतिदर्श का उपयोग किया जाता है।

xMs rFkk gkV – ने ''प्रतिदर्श किसी विशाल समग्र का एक छोटा प्रतिनिधि है।''

ckxkMl d vuqlkj – ''प्रतिदर्श किसी पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाईयों के एक समूह में से एक निश्चित प्रतिशत का चयन करना है।''

ih-oh- ;ax dk dFku g fd & ''एक सांख्यिकीय निदर्शन उस सम्पूर्ण समूह अथवा योग का एक लघु चित्र अथवा प्रतिनिधि अंश है जिसमें से यह प्रतिदर्श किया गया है।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देश्य पूर्व दैव निदर्शन विधि को अपनाया गया है। इसके अन्तर्गत विभिन्न आयु, लिंग, जन्मक्रम के व्यक्तिगत एएवं प्राथमिकता में विभिन्नता को दर्शाया गया है। विभिन्न शोध अध्ययन में प्रतिदर्श विधि को अपनाया गया है। क्योंकि समग्र या सभी इकाईयों का अध्ययन करके सभी इकाईयों में से कुछ को सावधानी व सूझबूझ द्वारा नमूने के रूप में चुन लिया जाता है जो समग्र का प्रतिनिधित्व करते हों और अध्ययन के साथ इन्हीं इकाइयों से संबंधित सूचनाऐं को इकठ्ठा करके उसी आधार पर परिणाम प्राप्त होते हैं। इसके पश्चात् सभी परिणामों पर लागू किया जाता है। इस प्रकार किसी शोध की सफलता एक सही प्रतिदर्श के चुनाव पर निर्भर होती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 300 व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया है। शोध के लिये चुने गये अध्ययन क्षेत्र में ग्वालियर क्षेत्र 60 वार्डो में बंटा हुआ है। प्रत्येक वाड्र से लगभग 5 व्यक्ति दैव निर्दशन विधि द्वारा चुने गये हैं। व्यक्तियों को चुनकर उनसे भरवाकर आवश्यक जानकारी प्राप्त कर ली गई है। व्यक्ति के प्रकार एवं आर्थिक सामाजिक स्तर ज्ञात करने हेतु निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग किया गया है।

प्रतिदर्श का चुनाव करते समय निम्नलिखित कारकों को नियंत्रित चर के रूप में किया गया है।

ekiu dk midj.k – आंकड़ों के संग्रहण के लिये उचित मापन के उपकरणों का चयन भी अनुसंधान का महत्वपूर्ण आयाम है। प्रमाणीकरण उपकरण वैध एवं विश्वसनीय परिणामों की प्रथम आवश्यकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में आयु व व्यक्तित्व मापन निम्नलिखित प्रमाणीकृत परीक्षणों की सहायता द्वारा किये गये हैं।

शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग कर जबाब हेतु भारांक बनाकर अंक द्वारा मापन किया गया है।

0;fDrRo dk ekiu –

अजीज एवं अग्निहोत्री द्वारा निर्मित इन्ट्रावर्सन (अर्न्तमुखी एस्ट्रावर्जन बर्हिमुखी) का उपयोग किया गया है।

इस परीक्षण मापनी का निर्माण डॉ. पी.एफ. अजीज व डॉ. रेखा अग्निहोत्री द्वारा किया गया है। इस मापनी में युग द्वारा निर्धारित व्यक्तित्व अपने अंतर्मुखी बर्हिमुखी व उभयमुखी का परीक्षण किया गया है। मापनी में 60 अंक दिये गये हैं जो कि अपने दैनिक जीवन के अनुभव व व्यवहार संबंधी हैं। यह मापनी के आधार पर शोधकर्ता को तीन प्रकार के व्यक्तित्व ज्ञात हुए हैं।

Qykdu & फलांकन हेतु अर्न्तमुखी बर्हिमुखी सारणी में सही उत्तर दिये गये हैं। अनुसंधानकर्ता ने उन सही उत्तरों को देखकर निम्न सूत्र द्वारा व्यक्तित्व का मापन किया है।

कुल प्राप्तांक = सही उत्तरों की संख्या – गलत उत्तरों की संख्या

यदि व्यक्ति ने – 15 व + 15 के मध्य की सीमा में अंक प्राप्त किये हैं तब उससे उभयमुखी कहेंगे जिस व्यक्ति ने +15 के ऊपर अंक प्राप्त किये हैं वह

बर्हिमुखी तथा जिस व्यक्ति ने –15 से कम अंग प्राप्त किये हों, तब वह व्यक्ति अर्न्तमुखी कहलायेगा। इस मापनी की वैधता 0.01 स्तर पर देखते हैं।

व्यक्तियों को रंग संबंधी प्राथमिकता एवं आयु व जन्मक्रम जानने के लिये शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया नियंत्रित चर जिसमें भारांक के आधार पर स्तर की गणना की गयी है।

0;fDr;k dh vk;q – शोध अध्ययन में 6 से 40 वर्ष के बालक व बालिकाओं, महिला व पुरूषों को अध्ययन में शामिल किया है। जिससे सभी आयु वर्ग के महिलाओं व पुरूषों के रंगों के चयन का अध्ययन किया जा सके।

व्यक्तियों के लिंग, आयु व जन्मक्रम के सदस्यों को बालक, महिला व पुरूषों को अध्ययन के निर्दष के रूप में उपयोग किया गया है।

0;olk; & शोध अध्ययन में सभी वर्ग के व्यक्तियों को सम्मलित किया जिसमें कामकाजी व अकामकाजी दोनों ही प्रकार के महिला, पुरूष लिये गये हैं।

ifjokj dk vkdkj –

व्यक्तिगत प्रभाव के अध्ययन हेतु केवल एकांकी परिवार के व्यक्तियों का अध्ययन किया गया है।

iwo ijh{k.k –

पश्चात् परीक्षण से संबंधित सीमाओं तथा कठिनाईयों का समाधान करने के लिये प्रयोगात्मक शोधन के अन्तर्गत पूर्व पश्चात् परीक्षण विधि को विकसित किया गया।

मुख्य सर्वेक्षण प्रारंभ करने के पूर्व सर्वेक्षण उपकरणों की उपयुक्तता तथा परिशुद्धता की जांच करने के लिये आवश्यक है कि सर्वेक्षक अपने पूर्व ज्ञान तथा अनुभव के आधार पर जिन उपकरणों का निर्माण करता है वे अपने आप में पूर्ण नहीं हो सकते जब तक कि उसकी सूचनाओं को उत्तरदाताओं से मिलकर न कर

ली जाए। शोधार्थी अपने शोध अध्ययन में विभिन्न आयु वर्ग, व्यवसाय, व्यक्तिगत, फैशन, धर्म, आकृति के 15–15 उत्तरदाताओं से सम्पर्क कर उपयोग किये जाने वाले उपकरणों की जांच कर ली है।

प्रस्तुत शोध में पूर्व परीक्षण के द्वारा साक्षात्कार अनुसूची में पूर्व निर्मित प्रश्नों की कमी में आवश्यक परिवर्तन तथा संशोधन करके अध्ययन शोध के लिये उपयोगी किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूची में प्रश्नों को उत्तरदाताओं के घर या उनके कार्य स्थल दोनों ही स्थान पर जाकर पूर्ति करवायी गयी है। यद्यपि प्रश्नावली पूर्ण करने के लिये कोई समयावधि पूर्ण नहीं की गई है तथा उन्हें भरने तथा कोई प्रश्न न छोड़ने हेतु निर्देशित किया गया है।

rF; ladYu –

तथ्य संकलन की प्रक्रिया की शुद्धता एवं व्यापकता पर ही तथ्यों के विश्लेषण एवं व्याख्या की सफलता आधारित होती है। अतः तथ्यों का संकलन साक्षात्कार, व्यक्तिगत निरीक्षण, एवं प्रश्नावली आदि विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से किया जाता है। सूचनादाताओं से तथ्य एवं सूचनाऐं एकत्रित करने के अलावा विषय से संबंधित सरकारी, अद्धशासकीय गैरशासकीय तथा संस्थागत प्रकाशित एवं अप्रकाशित अभिलेखों, पुस्तकों से भी तथ्य संकलित करना आवश्यक होता है।

xkYVkx dk vuqlkj –

''सामाजिक अध्ययनों में तथ्य संकलन का तात्पर्य केवल उन्हीं तथ्यों को एकत्रित करने से है जिन्हें अवलोकन द्वारा प्राप्त किया जा सके, ये तथ्य चाहे दृश्य हो या निहित।'' शोध हेतु तथ्य संकलन स्त्रोतों को दो भागों में वर्गीकृत किया जावेगा ।

1. प्राथमिक स्त्रोत
2. द्वितीयक स्त्रोत

1- ikFkfed L=kr &

ih-oh- ;ax – का कथन है कि ''प्राथमिक तथ्यों का तात्पर्य उन सभी मौलिक सूचनाओं अथवा आंकड़ों से है जिन्हें स्वयं अनुसंधानकर्ता प्राथमिक स्त्रोतों द्वारा प्राप्त करता है।''

प्राथमिक स्त्रोत के अन्तर्गत, साक्षात्कार एवं प्रश्नावली पद्धति की सहायता से शाोधार्थी द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध की आवश्यकता को ध्यान में रखकर जिन व्यक्तियों पर प्राथमिक स्त्रोतों के रूप में शोधार्थी ने चयन किया था वहाँ पर शोधकर्ता ने स्वयं जाकर सूचनाएं एकत्रित करने में साक्षात्कार अनुसूचित का उपयोग किया है शोधार्थी द्वारा रंग प्राथमिकता पर व्यक्तित्व के प्रभाव के विषय में जानने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया तथा व्यक्तियों के आर्थिक सामाजिक स्तर को ज्ञात करने के लिये एस.डी. कपूर (SE SSQ-U) द्वारा प्रतिपादित मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग किया, साथ ही व्यक्तित्व का मापन हेतु अजीज एवं अग्निहोत्री (IEI) द्वारा प्रतिपादित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया है।

2. f}rh;d L=kr –

द्वितीय तथ्यों का तात्पर्य उन समस्त सूचनाओं अथवा आंकड़ों से होता है जिन्हें एक अध्ययनकर्ता स्वयं एकत्रित नहीं करता बल्कि वे उसे प्रकाशित या अप्रकाशित प्रलेखों, अभिलेखों, पत्रों, डायरियों से आत्म–कथाओं तथा सरकारी रिपोर्टो आदि से स्वतः प्राप्त हो जाते हैं इसका तात्पर्य यह है कि द्वितीय तथ्य किसी विशेष स्थान अथवा विभाग में पहले से ही सुरक्षित होते हैं।

शोधार्थी द्वितीयक स्त्रोतों के अन्तर्गत रंग एवं व्यक्तित्व संबंधी पुस्तकें, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध ग्रंथ, जर्नल एवं अन्य संबंधित साहित्यकी सहायता द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के विषय का चयन करने के पश्चात् शोधार्थी आवश्यक समंकों तथा तथ्यों के संकलन की दृष्टि से विभिन्न महाविद्यालयों में स्थापित पुस्तकालय, विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय तथा अन्य संस्थाओं के पुस्तकालयों से सम्पर्क स्थापित कर अपने शोध प्रबंध के उद्देश्यों से अवगत कराया तथा उन्हें विषय संबंधित जानकारी देने के लिये तैयार किया इसके अन्तर्गत रंग प्राथमिकता पर व्यक्तित्व के प्रभाव को अपने विषय से संबंधित साक्षात्कार अनुसूची तैयार करके उन्हें प्रदान की गई तथा उनसे संबंधित विषय व समंक तथा तथ्य प्राप्त होने के पश्चात् उनको पूर्ण रूप से व्यवस्थित किया गया। विश्वसनीय तथ्यों को प्राप्त कर शोध प्रबंध में उनका सही तरीके से प्रयोग किया गया।

lkf[;dh; fof/k

ofyl rFkk jkoV~l – ''सांख्यिकी तथ्यों के परिणामात्मक पहलुओं के सांख्यात्मक विवरण है जो गणना अथवा माप के रूप में व्यक्त होते हैं।''

lfyxeSu d vuqlkj & सांख्यिकी वह विज्ञान है जो अनुसंधान के किसी क्षेत्र पर प्रकाश डालने वाले आंकड़ों के संकलन, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण तुलना तथा विवेचन की रीतियों से संबंधित होते हैं।''

प्रस्तुत शोध में रंग प्राथमिकता पर व्यक्तित्व के प्रभाव को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया गया है।

रंगों में सार्थक विभिन्नता ज्ञात करने हेतु काई मान का प्रयोग किया गया है। साथ ही विभिन्न व्यक्तियों में रंगों की प्राथमिकता आयु के हिसाब से रंगों में विभिन्नता मौसम व्यवसाय, धर्म इन सभी रंगों की सार्थक विभिन्नता में अंतर ज्ञात करने के लिये उपलब्ध आंकड़ों के मध्य काई मान ज्ञात किया गया है। आवश्यकतानुसार तथ्यों के चित्रमय प्रदर्शन की आवश्यकता को देखते हुए विभिन्न परिणामों के साथ दण्ड एवं रेखा चित्रों का उपयोग किया गया है।

dkbZ oxZ ijh{k.k – शोध अध्ययन में काई मान परीक्षण के अन्तर्गत एक घटना के संबंध में प्रेरित आवृत्तियों तथा प्रत्याशित आवृत्तियों के अंतर की यह व्याख्या करना होता है कि ऐसा अंतर संयोगवश है अथवा किसी संबंध के कारण सम्पन्न हुआ है।

सूत्र – $x^2 = \sum\left(\frac{Fo - Fe^2}{Fe}\right)$

Fo=प्रेक्षित आवृत्तियों

Fe=प्रत्याशित आवृत्तियों

प्रेक्षित एवं प्रत्याशित आवृत्तियों में काई वर्ग ज्ञात करने के लिये प्रत्येक आंकड़ों के अंतर के वर्ग को प्रतयाशित आवृत्ति से भाग देकर काई वर्ग का मान ज्ञात कर लेते हैं। ओर फिर प्रत्येक तालिका के सभी काई वर्ग का योग कर कुल काई वर्ग का मान प्राप्त कर लेते हैं। काई वर्ग मान निकालने के पश्चात् स्वतंत्रता की कोटि (d.f.) की गणना निमन सूत्र से करते हैं।

d.f. = (r-1) (c-1)

जबकि,

r = तालिका में पंक्तियों की संख्या

c= तालिका में स्तम्भों की संख्या

यदि तालिका में एक ही स्तम्भ होता है तो (C-1) के स्थान पर 1 का प्रयोग किया जाता है।

●●●